संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए बाप के लव में लीन रह सम्मान दो-सम्मान लो

(बड़े भाईयों की योग भट्ठी में)

आज बापदादा के पास गई तो क्या देखा, बापदादा बड़े स्नेह स्वरूप से गद्दी पर बैठे हैं और बापदादा के सामने भिन्न-भिन्न प्रकार के सुन्दर फूल थे, बापदादा बड़े प्यार से उन फूलों का गुलदस्ता बना रहे थे और गुलदस्ता बनाते हर फूल को देख-देख बहुत मुस्करा रहे थे। मैं जब नजदीक पहुंची तो बापदादा ने मधुर मिलन मनाते हमें भी गद्दी पर साथ में बिठा दिया और बोले, बच्ची आज बागवान अपने फूलों का गुलदस्ता बना रहे हैं। देखो एक एक फूल का रंग, रूप और रूहानी खुशबू कितनी भिन्न-भिन्न और सुन्दर है। देखो बच्ची, जब एक एक फूल होता है तो उसकी वैल्यु अलग होती है लेकिन जब सब फूल मिलकर संगठित रूप में गुलदस्ता बन जाता है तो उनकी वैल्यु और आकर्षण और बढ़ जाती है। तो बापदादा आज इस ग्रुप के बच्चों का संगठन देख खुश हो रहे हैं कि बच्चे उमंग-उत्साह से स्व पुरुषार्थ को तीव्र बनाने के लिए रूहानी भट्ठी में पहुंच गये हैं। इस पाण्डवों के ग्रुप की विशेषता बापदादा देख रहे हैं कि इस संगठन में हर बच्चा या तो साकार स्वरूप की पालना वाले हैं वा अव्यक्त स्वरूप के आदि पालना वाले बच्चे हैं और हर एक अपने-अपने सेवा स्थान के निमित्त जिम्मेवार बच्चे हैं। तो सदा लौकिक बाप भी बड़े बच्चों को देख खुश होते हैं कि यह मेरे हर कार्य, हर कर्म में साथी सहयोगी हैं। वैसे बापदादा भी इस ग्रुप को देख खुश हैं कि वाह मेरे सहयोगी साथी समान बनने वाले बच्चे वाह! बापदादा जानते हैं कि

यह निमित्त बच्चे सदा बाप समान निर्मल, निर्माण स्वरूप से बापदादा के हर कर्म को फालो करने वाले सर्व के आगे एक एक्जैम्पुल हैं। बोलो, बच्चे स्वयं को ऐसे रूहानी स्वमानधारी, स्वाभिमानी, सैम्पुल समझते हो? सदा यही स्मृति रहती है कि हम सिर्फ सेवा स्थान पर नहीं लेकिन इस ड्रामा की बेहद स्टेज का मुख्य एक्टर बन सदा विश्व स्टेज पर हर कर्म कर रहे हैं, सारे विश्व की आत्माओं की नज़र हमारे ऊपर है? तो इस स्मृति से सदा सहज स्वत: ही सम्पन्न बाप समान बन जायेंगे। सदा यह मन्त्र याद रहेगा कि ''जो कर्म हम करेंगे हमें देख और भी फालो करेंगे।'' बापदादा को इन विशेष बच्चों को देख साकार रूप द्वारा लास्ट उच्चारे हुए वरदानी महावाक्य याद आ रहे हैं कि बच्चे सदा निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी रहना है। इन्हीं तीन शब्दों में 4 ही सबजेक्ट समाई हुई हैं। बस इन्हीं तीन शब्दों को याद रखो तो त्रिकालदर्शी बन, सदा विघ्न-विनाशक बन औरों को भी बनाते रहेंगे।

समय की समीपता और सम्पूर्णता के बैलेन्स को सदा चेक करते शक्ति, स्नेह, संगठन को शक्तिशाली बनाते चलो। सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में दुआयें देते, दुआयें लेते रहो। बापदादा को इस ग्रुप में बहुत-बहुत सफलता की आशायें हैं। अब उन आशाओं के दीपक को तीव्र करो। सदा बाप के लव में लीन रह सम्मान दो, सम्मान लो क्योंकि सम्मान देना ही सम्मान लेना है। यही संगठन की शक्ति बाप को प्रत्यक्ष करने की सहज विधि है। ऐसे कहते ही बापदादा हर बच्चे को अपने नयनों में इमर्ज कर बहुत शक्ति स्नेह भरी दृष्टि दे रहे थे। फिर बाबा बोले बच्ची, इस ग्रुप के लिए क्या सौगात ले जायेंगी! बस बाबा का कहना था और सेकण्ड में क्या देखा, बहुत ही सुन्दर सफेद-सफेद लाइट से चमकते हुए हंस के रूप में आसन थे, बाबा बोले बच्ची सदा इस हंस आसन पर स्थित रह सेवा का हर कार्य और स्व स्थिति में उड़ती कला का अनुभव करते रहना। इसी आसन से ही विश्व सिंहासन के अधिकारी बनना है। यही तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसे मधुर बोल, मधुर मिलन मनाते हम अपने साकार वतन पहुंच गई।